व्यंग्य मोदी जी, आप किसानों के आगे झुक रहे हो!

विष्णु नागर

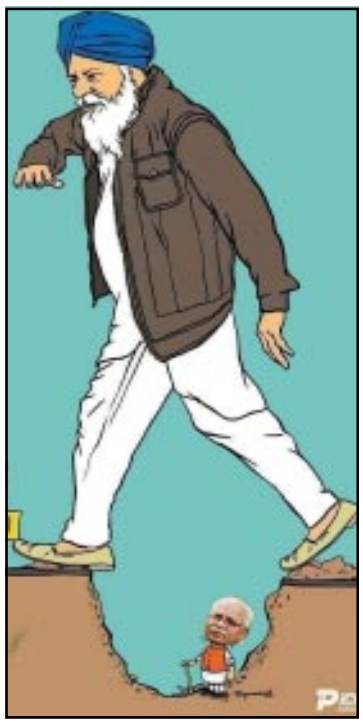

मोदी जी, आप किसानों के आगे झुक रहे हो! यह सच तो नहीं है न! अगर यह सच है तो मोदीजी, यह तो भक्तों और गोदी चैनलों का दिल तोड़ने वाली बात हुई! देखो मोदीजी, समझो। भक्त टाइपों का दिल बड़ा नाजुक होता है-शीशे से भी नाजुक। सब करना मगर उनका दिल मत तोड़ना।वही आपका एकमात्र सहारा हैं। एक बार उनका दिल टूटा तो फिर हमेशा के लिए टूट गया समझो। फिर जुड़ता नहीं फेविकोल के बाप से भी। भक्त टाइपों को यह नहीं लगना चाहिए कि हमारा शेर, हमारा हिन्दू- हृदय सम्राट किसी के आगे झुक गया! बताइए, जिसके आगे भक्तों को सारी दुनिया झुकी हुई दिखाई देती है,वह किसानों के आगे झुके, इन नाचीजों के आगे! कह दो कि यह भ्रम फैलाया जा रहा है। कह दो कि यह साजिश है। वैसे भी अभी चार-छह दिन पहले तो आपने कहा था न कि ये तीन कृषि कानून किसानों के हित में हैं। किसानों को भड़काया जा रहा है और अब आपकी ही सरकार किसानों की बात कुछ -कुछ मानती हुई -सी लग रही है। यह क्या हो रहा है मोदी जी! आपकी प्रतिष्ठा, आपकी इमेज को कहीं आपके ही लोग धक्का तो नहीं पहुँचा रहे हैं!लेकिन आपकी इमेज अब केवल आपकी इमेज नहीं है । यह आपके भक्तों की इमेज भी है। इसे धूल में मिलाने की इजाजत आपको भी नहीं दी जा सकती!

अरे आप तो संविधान के आगे नहीं झुके, कानून के आगे नहीं झुके। संसद के आगे नहीं झुके।आंदोलनों के आगे नहीं झुके, अदालत के आगे नहीं झुके।और जो बच गए,जो नहीं झुके,जो झुक नहीं सके, उनके लिए आपने जेल में इतना अच्छा इंतजाम करवा दिया है कि एकदम मौत के करीब जब तक कोई पहुँच न जाए, तब तक आप उनको अस्पताल तक भी पहुँचने नहीं देते! आप तो ऐसे अद्भुत कलाकार हो कि जिस समुदाय के खिलाफ दंगा भड़काया ,उसीके लोगों को निशाने पर ले लेते हो। आप तो ऐसे महामना हो कि सीएए और एन आर सी के खिलाफ आंदोलन करनेवालों को 'देशद्रोही' बना देते हो। आप तो ऐसे 'देशभक्त' हो कि आपने अपने लोगों,अपने गोदी चैनलों के जरिए इन किसानों को खालिस्तानी, नक्सलवादी बता देते हो।और अब आप इन्हीं के आगे झुकते हुए लगें और वह भी इसलिए कि ये बहुत बड़ी तादाद में हैं और इन्होंने दिल्ली घेर रखी है और इन्हें देश-विदेश से समर्थन मिल रहा है! भक्त समझेंगे कि हिंदू हृदय सम्राट खालिस्तानियों-नक्सलियों से डर गया! कायर मत बनो। प्रेस कांफ्रेंस करने से डरो मगर किसानों को ठीक करने से मत डरो!

आप अपने नाम पर इस तरह बट्टा नहीं लगने दे सकते ! ऐसा हुआ तो फिर लोग मोदी जी को मोदी जी नहीं मानेंगे! छह साल बाद अब आप झुकने लगे हैं,बताइए आपकी यह इमेज बन गई तो इसका मैसेज कितना बुरा जाएगा!फिर तो जो देखो,वही शेर हो जाएगा, आप पर सवारी गाँठने लगेगा! ब्रांड मोदी की इज्जत मिट्टी में मिल जाएगी।अपने को बाबा रामदेव मत बनने दो।

हे भगवान,क्या हो गया है इस 'हिन्दू हृदय सम्राट' को कहीं उसका हृदय परिवर्तन तो नहीं हो रहा है? लेकिन मोदी जी का तो हृदय ही नहीं है तो उसमें परिवर्तन कैसे हो सकता है! बिना हृदय के हृदय परिवर्तन ? ऐसा तो कभी हुआ नहीं मानव इतिहास में! हिन्दी कहानी में भी नहीं हुआ !

मोदीजी अब तो मुझे ऐसा लगने लगा है कि आप होशियार हो तो ये किसान आपसे डबल होशियार हैं। जानते हैं आपको कि आप बहुत ऊँची रकम हो, तो वे भी काफी तैयारी से आए हैं। आप तो इमेज बनाते हो कि किसान भोलेभाले होते हैं,उन्हें कोई भी भड़का सकता है मगर लगता है, ऐसा नहीं हैं। ये जानते हैं कि आपसे लड़ाई लंबी भी चल सकती है,इसलिए छह महीने का राशनपानी साथ लेकर आए हैं।इनके दिमाग साफ हैं। आपको अपना एजेंडा मालूम है तो इनको भी अपना एजेंडा मालूम है।ये अफसरों-मंत्रियों के झाँसे में आनेवाले नहीं।इसलिए जरा सावधानी से चलिओ वरना ये आपकी सारी कांति का हरण कर लेंगे।लगता है, इस बार शेर को सवा शेर मिल गया है। मैंने बता दिया साफ- साफ,बाकी आप जानो। हिन्दू राष्ट्रवाद की रक्षा की जिम्मेदारी आपने ली है,मैंने नहीं!

मुझे आश्चर्य है कि मोदी जी आपने इन्हें लड़ाने का खेल अभी तक शुरू क्यों नहीं किया!आपने हिन्दुओं-मुसलमानों को बढ़िया से लड़ा दिया,पिछड़ों-पिछड़ों और दलितों-दलितों को भी लड़ा दिया।किसानों को भी जल्दी से लड़ा दो न, आपस में! टंटा मुकाओ। इनकी एकता आपकी कुर्सी ,आपकी पार्टी के लिए घातक है यानी आपकी भाषा में देश के लिए घातक है।देश के सामने खतरा देखकर भी चुप रहोगे तो देश आपको कभी माफ नहीं करेगा ,मोदीजी! किसानों को चीन मत समझो, पाकिस्तान समझो!चुप मत रहो,इशारे में बातें मत करो।और चलाओ अंग्रेजोंवाली चाल-बाँटो और राज करो।जय हिन्द,जय भारत।वंदेमातरम।भारत माता की जय। मोदी-मोदी।

श्रम किसान आन्दोलन के समय ट्रेड यूनियनों की अनुपस्थिति

सतीश कुमार

बेशक देश भर की तमाम ट्रेड यूनियनों (बीएमएस को छोड़कर) ने किसान आन्दोलन का समर्थन किया है, उनके साथ कंधे से कंधा मिला कर सहयोग करने की बात कही है। 9 दिसम्बर के भारत बंद में साथ रह कर कारखाने बंद करने को कहा है, परन्तु धरातल पर कहीं कुछ नज़र नहीं आता। दरअसल ट्रेड यूनियनों के नाम पर केन्द्रीय 'मठाधीशों ने समर्थन एवं बंद की घोषणा तो कर दी परन्तु इस घोषणा को अमली जामा पहनाने वाला काडर तो धरातल से गायब है, किसी एक का नहीं बल्कि सभी फ़ेडरेशनों का हाल लगभग एक जैसा है। फ़रीदाबाद, गुड़गांव तथा कुछ और जगहों पर सीटू वालों ने जरूर कुछ रस्म अदायगी करके सड़कों पर हाजरी दर्ज कराई है, परन्तु ठोस एवं प्रभावी वे भी कुछ खास नहीं कर पाये। लाखों मज़दूरों के शहर में मात्र 50-100 लोग़ों की रैली-प्रदर्शन क्या मायने रखती है ?

सीटू ने चलो रस्म अदायगी तो की बाकी इन्टक, एटक, एचएमएस आदि की तो कहीं रस्म अदायगी भी नजर नहीं आई। हां एक छोटा सा नवजात संगठन इंकलाबी मज़दूर केन्द्र के लोग जरूर कुछ करते नज़र आये। बेशक उनकी संख्या कम रहती है परन्तु वे जन विरोधी मुद्दों का संज्ञान लेकर सदैव ही प्रदर्शन करते नज़र आ जाते हैं।

ट्रेड यूनियनों के राष्ट्रीय मुखिया जो अपने-अपने कार्यालयों से समर्थन एवं बंद का फ़र्मान जारी करके निश्चिंत हो जाते हैं क्या उन्हें मालूम नहीं कि आज देश के 75 प्रतिशत से अधिक औद्योगिक मज़दूर किसी भी ट्रेड यूनियन के सदस्य नहीं रह गये हैं क्योंकि वे कैजुअल हैं या ठेकेदारी में हैं या ट्रेनी के नाम से अपनी मेहनत बेचने को मजबूर हैं। शेष बचे करीब 25 प्रतिशत भी केवल नामचारे को ही सदस्य रह गये हैं। उनके लिये यूनियन केवल अपने निहित स्वार्थों की पूर्ति यानी अच्छे वेतन, बढिया सेवा शर्तों के साथ सुरक्षित नौकरी की गारंटी के अलावा कुछ भी नहीं है। उनके लिये ऐसा कोई भी संघर्ष बेमानी है जिसके द्वारा उन्हें व्यक्तिगत रूप से कुछ न मिलता हो, ऐसे में उन्हें क्या लेना किसानों के संघर्ष से? वे क्यों अपनी दिहाड़ी व उर्जा गंवाने लगे बिना मतलब के?

दरअसल इसके लिये मज़दूर कतई दोषी नहीं हैं, कोई दोषी है तो मज़दूर नेता जो मठाधीश बन कर यूनियनों पर कुंडली मारे बैठे हैं। मज़दूर को ट्रेड यूनियन का दर्शन एवं राजनीति पढाने तथा व्यापक मज़दूर वर्ग के भाईचारे के प्रति जागरूक करने की अपेक्षा अपने-अपने निजी हित साधने में जुटे हैं, तरह-तरह के व्यापार करने में व्यस्त हैं। इसी के चलते मज़दूरों के बीच उनकी इतनी साख और विश्वसनीयता भी नहीं बची है जो मज़दूर उनके आह्वान पर एकजुट होकर खड़े हो जायें। 'बोये पेड़ बबूल के तो आम कहां से होएं' वाली कहावत यहां पूरी तरह चरितार्थ होती है।

रेलवे इस देश का सबसे बड़ा सार्वजनिक उपक्रम है। मोदी राज से पूर्व इसमें 15 लाख कर्मचारी कार्यरत थे। लाखों पद रिक्त होने व नई भर्तियां न होने के चलते करीब चार लाख पद घट गये हैं। शायद ही कोई ऐसी राष्ट्रीय फ़ेडरेशन हो जिसकी यूनियन सदस्यता इस उपक्रम में न हो। किसी जमाने में अपनी प्रभावशाली छवि रखने व लम्बी हड़तालों के जरिये अपनी ताकत का प्रदर्शन कर चुकी रेलवे यूनियन भी आज मृत प्राय: है। आज के किसान आन्दोलन के पक्ष में जहां न केवल पूरे देश में बल्कि विदेशों तक में समर्थक सड़कों पर उतर आये हैं, रेलवे की किसी भी यूनियन ने जबान तक भी नहीं हिलाई, हाथ-पैर हिलाना तो दूर की बात है।

दरअसल रेलवे यूनियन किसी और के लिये क्या संघर्ष करेंगी वे तो अपनी ही दुर्दशा पर रोने लायक नहीं बचे हैं। मोदी सरकार पूरी रेलवे को ही बेचने की तैयारी में जुटी है। इसके लिये जरूरी है कि कर्मचारियों की संख्या कम से कम करके इसे नये कार्पोरेट मालिकों को सौंपा जाए। कोई भी नया मालिक नहीं चाहता कि उसे उद्योग के साथ-साथ कर्मचारियों का बोझ भी ढोना पड़े। कार्पोरेट इन कर्मचारियों को बहुत महंगा, निकम्मा, हरामखोर व रिश्वतखोर मान कर चलता है। वह अपने हिसाब से अपनी पसंद के सस्ते से सस्ते कर्मचारी भर्ती करके रेलवे को चलाना चाहेगा। इसी की तैयारी में मोदी ने 50 प्रतिशत से अधिक ट्रेनें बंद कर छोड़ी हैं। जो बड़ी ट्रेनें चल भी रही हैं उनमें टिकट के दाम अनाप-शनाप बढाये जा रहे हैं। समझा जा रहा है कि कम ट्रेनों के चलाने से आय में जो कमी आयेगी उसकी पूर्ति किराये बढा कर की जायेगी। यही कार्पोरेट मॉडल है।

कार्पोरेट मॉडल की सुविधाजनक सफ़लता एवं मुनाफ़ाखोरी को सुनिश्चित करने के लिये मोदी ने ट्रेनों की संख्या घटाई है। इसमें सबसे ज़्यादा काम आया कोरोना। कोरोना महामारी का भय दिखा कर दिल्ली-पलवल-मथुरा तक चलने वाली तमाम शटल एवं पैसेंजर ट्रेनें पहले तो अस्थाई रूप से बंद की गयी थी लेकिन अब वे स्थाई रूप से बंद कर दी गयी हैं। इन छोटी ट्रेनों से यात्रा करने वाले दैनिक यात्री, जो निम्न मध्य वर्ग के मेहनतकश होते हैं। इन यात्रियों की तरफ़ से भी कोई आवाज न उठने के चलते सरकार ने, लगता है पक्का फ़ैसला कर लिया है इन ट्रेनों को स्थाई रूप से बंद करने का। इन ट्रेनों को बंद रखने की जरूरत इस लिये भी है कि कार्पोरेट्स द्वारा जो नई तीव्र गति की ट्रेनें चलाई जानी हैं, उनके लिये 100-100 किलोमीटर दूर तक लाइन क्लीयर मिलनी जरूरी है और बिना नई लाइनें डाले, यह तभी संभव हो सकता है जब आम जनता की छोटी व सस्ती ट्रनों को घाटे का सौदा बता कर बंद कर दिया जाय।

वैज्ञानिक समाजवाद के जनक कार्लमार्क्स ने लिखा था कि औद्योगिक मज़दूर संगठित होकर ट्रेड यूनियन बनायेंगे और क्रांति के हिरावल दस्ते के रूप में किसानों व अन्य मेहनतकश वर्ग की अगुवाई करेंगे। परन्तु अपने आपको मार्क्सवादी ट्रेड यूनियन बताने वालों सहित तमाम ट्रेड यूनियनों ने उनके कथन को उल्टा कर दिया। आज किसान संघर्ष का हिरावल दस्ता बन कर उभर रहा है और ट्रेड यूनियन उनके पीछे घिसटने का खिसियाना प्रयास कर रही है।

(सम्पादक : मजदूर मोर्चा)

किसानों को ऐसे बता रहे हैं 'खालिस्तानी'...

ज्योति गोयल

किसान आन्दोलन में सरकार और किसानों के बीच मसला हल होते हुए नज़र नहीं आ रहा है और किसान अपनी मांगो को लेकर दृढ़ है। इसी बीच आन्दोलन को भ्रमित साबित करके इसे सरकार और देश के खिलाफ एजेंडा बताने की कोशिशें भी चली हैं।

आन्दोलन के दिनों कई ऐसी तस्वीरें और वीडियो वायरल हुई है जिनके जरिए ये दर्शाया जा रहा है कि आन्दोलन खालिस्तानी समर्थकों द्वारा चलाया जा रहा है। इन्ही में से एक तस्वीर है एक सिख की जोकि "वी वांट खालिस्तान" का पर्चा पकड़े हुए है। असल में ये तस्वीर 2013 की है जहां ऑपरेशन ब्लू स्टार की बरसी पर खालिस्तान समर्थकों ने मोर्चा निकाला था।

ये दोनों फोटो विदेश में हुए प्रदर्शनों की है लेकिन भाजपा आईटी सेल इसे किसान आंदोलन की बता रहा है

इसी तरह एक और तस्वीर वायरल हुई जिसमें कुछ सीख भारतीय झंडे पर जूता रखे और उसे जूता दिखाते नज़र आ रहे है। इस तस्वीर को ध्यान से जांचे तो पता लगता है कि इसपर 2013 लिखा हुआ है और दल खालसा यूके लिखा हुआ है। ये प्रदर्शन सिखों और अल्पसंख्यकों पर हुए उत्पीड़न के खिलाफ किया गया था। इसी तरह कुछ वीडियो वायरल हुई है जिनमे खालिस्तान के समर्थन में नारे लगाते हुए लोग नजर आ रहे है और असल में ये सभी वीडियो पुराने आन्दोलन से जुड़ी हुई है। अक्सर राजनीतिक पार्टी समर्थक इस तरह की झूठी खबरों द्वारा मामले को भटकाने का कोशिशें करते हैं।